मनुष्य बनो

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा,   प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

रक्षक

दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❀ मनुष्य बनो ❀

१९७

वर्ष २९	आषाण सं० २०३६ वि० जुलाई, १९७९	संख्या १०

गुरु की महिमा

आपही माली बाग लगावे, सींचे आप फुलवारी ।
आपही फूल कली है आपही, आप बना बनवारी ॥
कोयल बनकर कूक सुनावे, बैठ आम की डारी ।
बौर देख बौरा हो जाये, बौरापन से न्यारी ॥
आपही बौर आप अमृत रस, आप आम रसधारी ।
आप ही चखे आम रस रसना, आप करे रखवारी ॥
फूल मध्य है वास सुवासा, रंग रूप गुलकारी ।
आपही निरखे अपनी शोभा, निरखत होत सुखारी ।
यह तो भेद कोई गुरुमुख पावे, गुरुपद होय भिखारी ।
हम तो सार मरम लख पाया, राधास्वामी के बलिहारी ॥

—०—

त्याग

त्याग का अर्थ यह नहीं है कि घर बार छोड़ बैठे और लंगोटी लगा ली। इसको और कोई त्याग और वैराग कहे परन्तु मैं तो इसे कायरपना कहूंगा। कोई क्या त्याग करेगा और क्या ग्रहण करेगा ? घर बार स्त्री पुत्र बाल बच्चे के छोड़ने से क्या हुआ ? हाँ यदि मन की वासनाओं का त्याग करो तब तो बात है। मन तो जहाँ जाओगे वहाँ ही साथ रहेगा। आप बन्दर की तरह नाचेगा और तुमको भी तरह तरह के नाच नचायेगा। बाहरी कर्मों का त्याग, त्याग नहीं है। यह तो भ्रम की बात है। कर्म के संस्कारों के अंकुर तो रहते ही हैं। इनसे बचकर कहाँ निकलोगे ! हाँ यदि साहस है तो इनको मेट दो, न रहे बाँस न बजे बाँसुरी और जो यों ही काम काज छोड़ बैठे या काम काज से भाग निकले तो भगोड़ा कब तक भागेगा और भागकर कहां जायेगा ! कर्म के फल से तो ब्रह्मा भी छुटकारा नहीं दिला सकता। कर्म का भूत छाया की तरह पीछे पीछे लगा रहेगा। मनुष्य कुछ चाहता है और होता कुछ ! क्यों ऐसा होता है ? प्रारब्ध ऐसा कराता है—

आपन चेती होत नहिं, प्रभु चेती तत्काल।
बल चाह्यो आकास को, प्रभु पठयो पाताल॥
अपने मन कुछ और है दाता के मन और।
ऊधों सों माधव कहें, झूटी मन की दौर॥

क्या झूठे त्याग और ग्रहण के झगड़ों में पड़े हो ? इनमें कब तक पड़े रहोगे। छोड़ो इन निकम्मी बातों को। घर में रहो, बाल बच्चों का साथ दो और धीरे धीरे मन को सोधते और साधते चलो। यह अच्छा है या जंगल और पगडंडियों की धूलि फांकनी अच्छी है ? वह समय गया जब त्यागी और वैरागी गुलछर्रे उड़ाया करते थे। अब श्रद्धा से देना तो दूर रहा, कोई मांगी भीख भी नहीं देता। समय के

परिवर्तन को भी देखते हो या वही पुराना राग अलापते रहोगे ! एक समय था, आया और गया । अब वह आने वाला नहीं है । क्या त्यागी होकर भिखमंगा बनना है ? छी ! छी !! छी !!! राम ! राम !! राम !!! यह कहां का साधूपना और त्याग है ? आज कल के ब्रह्मज्ञानियों की लीला देखो । मुख से तो "अहं ब्रह्मास्मि" का वाक्य सुनाते रहते हैं और मांगते हैं भिक्षा ! ऐसे भिखमंगे ब्रह्म को दो धक्के दो कि वह रसातल चला जाये । यह ज्ञान मार्ग को कलंकित करने वाले हैं । न समझ न बूझ ज्ञानी बने फिरते हैं विचार सागर क्या पढ़ लिया कि बस ब्रह्मपद को प्राप्त हो गये । तुम यह चाल न चलो । जो कोई झूटे त्याग का गीत गाये उससे कहो "बाबा ! स्वयं बार्ता न बना । तेरी रहनी सहनी और तेरा जीवन व्यवहार बता रहा है कि तू गली गली ठोकरें खाता फिरता है, क्या हमको भी वैसा ही बनाना चाहता है ? हम तेरे ज्ञान को नहीं चाहते । यदि ज्ञान का यही अर्थ है कि मनुष्य भीख माँगता फिरे तो तू अपना ज्ञान अपने पास रख ।

कौड़ी कौड़ी माया बटोरे, बने हैं कैसे ज्ञानी ।
ज्ञान पन्थ की खबर न पाई, बेखो यह नादानी ॥

भला यह कौन ज्ञान है ?

सच्चा त्यागी वह है जिसे सब कुछ प्राप्त हो और वह उसकी ओर ध्यान तक न दे । संसार में रहना परन्तु संसार का होकर न रहना त्याग है । ऐसे मनुष्य को लंगोटी लगाने की क्या आवश्यकता है ?

=×=

निवेदन

प्रिय ग्राहक बन्धुओं

राधास्वामी

आपको सर्व विदित है कि मँहगाई किस कदर बढ़ती जा रही है लेकिन 'मनुष्य बनो' फिर भी आपकी यथा सम्भव सेवा करने का प्रयत्न कर रहा है। कागज एवं छपाई की दरें दिनों दिन बढ़ती चली जा रही है। ऐसी स्थिति में भी बार-बार निवेदन करने पर ५० प्रतिशत से अधिक लोगों ने अभी तक अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है। जिसकी बजह से मनुष्य बनो पत्रिका इस समय संकटमय स्थिति में गुजर रही है और यदि यही हालत कुछ और समय तक रही तो शायद हम आप लोगों की सेवा करने में असमर्थता महसूस करने लगेंगे। और गुरु महाराज के अमृत स्वरूप प्रवचनों का घर बैठे जो रस हमें व आपको प्राप्त होता है को पान करने से बंचित रह जायेंगे।

ऐसी स्थिति में आप सभी बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह अपना बकाया मूल्य शीघ्रता पूर्वक भेजने का कष्ट करे ताकि पत्रिका आर्थिक संकट का सामना कर आपकी सेवा कर सके। धन्यबाद

—प्रकाशक

धन्यवाद

१२५) रु० श्री मेघराज जी, सिकन्दराबाद ने। १५) श्रीमती कान्ता शर्मा, ब्यावर। १००) बद्रीनरायण पूरालाल, उज्जैन। ११) कर्ता कृष्णण जी शाहदरा, दिल्ली ने मनुष्य बनो की सहायतार्थ भेजे हैं। मनुष्य बनो इन सब भाई बहिनों का बहुत २ आभारी है। जिन्होंने संकट के समय मनुष्य बनो की सहायता कर इसे चलाने में हमारी मदद की।

प्रकाशक

प्रवचन

हजूर परमदयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर दिनांक १६-६-७८

अङ्क जून, १९७९

हाथ में सोठा नहीं पकड़ा, वचन के डन्डे मारता हूँ। सच्चाई वर्णन करता हूँ जिसे अज्ञानो और टेकी सुनने से घबराते हैं। जिस प्रकार डन्डा खाने से कष्ट होता है उसी प्रकार अज्ञानी जीव सच्ची बात सुनकर भवकते हैं हाय ! यह बूढ़ा क्या कह रहा है। मगर जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह ठीक है। मैं उसका प्रमाण तुम्हें वाणी से दे रहा हूं ताकि कोई यह नहीं कह सकता कि मैं जो कुछ कह रहा हूं अपनी ओर से कह रहा हूँ। मेरे शब्द और वर्णन शैली अपनी है मगर वाणी स्वामीजी की है।

भटक-भटक भटकाया सब जग।
कोई न लगाया ठौर ठिकान ॥

जब मैं इस वाणी को पढ़ता था तो मैंने रोना ही था क्योंकि जज्बा उठता था कि मैं भी वहाँ प चू जहाँ ये कहते हैं। उसके लिए कुरबानी करनी पड़ती थी। मैंने जो कुछ कुरबानी करनी थी, की। मैंने अपनी जात के लिए सारी आयु झूठ नहीं कहा। किसी को अनुचित ढंग से धन नहीं खाया। मन्दिर की सब्जी और दवाई मुफ्त नहीं लेता। सोलह साल से मन्दिर बना हुआ हैं। आप लोगों का धन आता है। मैंने कभी भी अपनी जेब में पैसा नहीं रखा। मेरा अपना पैसा भी नहीं होता। अगर कोई देता है तो चार दिन के बाद भी जेब से निकालकर मन्दिर में दे देता हूँ अगर मैं समझता हूँ कि यह मन्दिर का है, मेरा नहीं। मैंने सचाई की खोज में जीवन व्यतीत किया है। एक अवगुण मुझमें अवश्य रहा कि मैं छोटी आयु में काम

में फँस गया। उसके बाद सात साल बचा रहा जबकि बसरेबगदाद रहा। जब वापिस आया तो फिर पाँच साल फँसा। फिर होश आई और अपने आपको सम्भाला। सिवाय इसके और मुझमें कोई दोष नहीं था। किसी के साथ धोखा फरेब नहीं किया और न ही किसी की बुराई की। पंथों के बारे में अवश्य कह देता हूँ कि भई ! अगर कबीर साहिब या बाकी सन्तों को यह अधिकार था कि उन्होंने राम कृष्ण को काल का अवतार कहा तो मुझे भी अपनी वाणी कहने का अधिकार है। वह वाणी में लिखते हैं—

इनही भरोसे तुम मत रहियो।

कबीर साहिब कहते हैं कि राम, कृष्ण और विश्वामित्र ने मुक्ति नहीं पाई, इनके भरोसे मत रहना। मैंने ब्राह्मण होते हुये यह सब कुछ सहन किया। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलुँगा और देखूँगा कि सचाई क्या है। अगर आज मुझे सच्चाई न मिलती तो मैं कबीर साहिब, राधास्वामी मत और गुरु नानक साहिब के विरुद्ध बिल्कुल जहर उगल जाता। कभी परवाह न करता मगर अब मैं सच्चाई कहने और सुनने के लिए विवश हूँ। अगर मुझे सन्तमत पर विश्वास दिलाया तो आप लोगों ने दिलाया। दातादयाल नहीं दिला सके। उनसे मुझे प्रेम, आनन्द और सहारा मिला मगर सचाई का पता मुझे तुम लोगों से लगा और यही उन्होंने कहा था जब मुझे काम दिया था कि तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। मुझे सतज्ञान मिल गया। मेरी समझ में बात आ गई कि यह सब मन का खेल है और कुछ नहीं। जब तक तुम मन में हो तब तक स्थाई जीवन प्राप्त नहीं कर सकते।

ऐसी हालत देख जगत की, सन्त सत्गुरु प्रगटे आन।
गुरु सेवा और नाम महात्म, सत्संग सतगुरु किया बखान॥

संसार ने गुरु सेवा को नहीं समझा। संसार वालों ने गुरु को

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

सेवा यही समझी है कि मानवता मन्दिर के दो कमरे बना दो। बाबा फकीर को कपड़े या जूते लाकर दो। यह संसार का व्यवहार है। अगर धन देने से गुरु सेवा मिल जाती तो ये बड़े २ धनी आदमी ही ले जाते जो तुम धन से सेवा करते हो उससे तुम्हारा प्रवृति मार्ग बनता है। धन देने से धन मिलेगा। मगर लाख रुपया दान देने से अगर तुम यह आशा रखो कि तुम्हारा आवागवन चला जायेगा। यह समाप्त नहीं होगा कोई नहीं समझता कि गुरु सेवा क्या है ? गुरु सेवा है जैसे वाणी में लिखा है—

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन सुनकर नित मन में गुणे।
गुण गुण काढ़ लये तिस सारा, काढ़ सार तिस करे अहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग मन मत सब गई गँवाई ॥

यह गुरु सेवा है। मैं बोल रहा हूं। तुम मेरी बातो को सुन रहे हो इन पर विचार करो। अगर सच्ची लगती हैं तो उन पर अमल करो तब तुम गुरु सेवक हो। केवल मन्दिर में दो सौ या चार सौ रुपया देने से गुरु सेवक नहीं बनोगे। अगर रुपया दोगे तो तुम्हें रुपया मिलेगा यह संसार का व्यवहार है। मगर अगर तुम दान इसलिए देते हो कि उसका फल मिले तो तुम्हें उसका फल लेने के लिए दुसरा जन्म लेना पड़ेगा। सदा निष्काम सेवा किया करो तब बचोगे वरना नहीं बचोगे।

गुरु सेवा और नाम महात्म, समसङ्ग सतगुरु किया वखान।

वह कहते हैं कि इसका इलाज यह है कि तुम सत्गुरु की संगत करो और गुरु को सेवा करा। नाम क्या है ? गुरु के मुँह से जो वचन निकलता है, वह नाम है। जो उस वचन पर अपने अन्तर अमल करता है, वह नाम है। एक तो वाहर का गुरु शब्द है जैसे मैं कह रहा हूं। इसको सुनकर जो अन्तर का शब्द सुनता हैं, वह नाम है मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीरचन्द ! तू बता कि तूने अन्तर के शब्द सुने। अगर सुने तो तुझे क्या मिला ? क्या

अन्तर के शब्द सुनने से तू आवागमन से बच गया है ? मैं अपनी बाबत जानता हूं। मैंने बसरेवंगदाद में वीनें सुनी, बड़े २ प्रकाश देखे इतना प्रकाश देखा कि मैं रजाई में बैठा हुआ छत की कड़िये गिन सकता था। मगर जब मैं वापिस हिन्दोस्तान आया तो क्या मैं कामी नहीं हुआ ? दातादयाल ने कहा तेरे सन्तान नहीं है, सन्तान पैदा करो। अगर मैं स्त्री के पास सन्तान के लिए जाता तो कोई दुख न था, मैं तो स्वाद में फँस गया। यह ठीक है कि मैंने सारा जीवन रिश्वत नहीं खाई मगर क्या मेरे दिल में यह विचार नहीं आता था कि मेरी उन्नति हो जाये। मैं अब भी अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्यों फकीरचन्द ! तुझे यह इच्छा नहीं कि लोग मन्दिर में चार पैसे दे जाये तो मन्दिर चले ? अवश्य अकथ इच्छा है। जब स्टाफ के आदमी गलती करते थे तो क्या तुझे क्रोध नहीं आता था ? आता था केवल शब्द सुनने से काम नहीं चलता मगर बिना शब्द सुनने के भी चारा नहीं। केवल शब्द अन्तिम अवस्था नहीं है शब्द अभ्यास और सत्संग दोनों चीजें आवश्यक हैं। जो अकेले अभ्यास ही करते हैं और शब्द पर ही बल देते हैं किसी पूर्ण पुरुष का सतसंग नहीं करते वे भी अधूरे हैं। जो केवल सतसंग ही करते हैं और अभ्यास नहीं करते वे अधूरे हैं। इसलिए सतसंग और साधन दोनों इकट्ठे होने चाहिए। मुझे दोनों से क्या लाभ हुआ ? मैंने अभ्यास किया, वीने सुनी फिर भी कामी हुआ यद्यपि मैं बाहर नहीं गया अगर सन्तान के विचार से स्त्री के पास जाता तो और बात थी मैं तो स्वाद के लिए स्त्री के पास जाता था। मैंने फिर क्या समझा ? आप सतसंगी मेरे सच्चे सतगुरु सिद्ध हुये। जब से मुझे यह विश्वास हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे स्वयं पता लग गया कि मेरे अन्तर जितने विचार, संकल्प पैदा होते हैं ये भी कलित और माया हैं। ये हैं नहीं लेकिन भासते हैं। जिस प्रकार मैं तुम्हारे अन्तर प्रगट होता हूं लेकिन मैं तो होता नहीं यह तुम्हारी अपनी ही कल्पना है। जब मैं १९२१

में दस बारह हजार रुपये लेकर आर्ती करने गया तो वह इन्का करते थे लेकिन मेरे दिल में सेवा करने का जज्वा था। मैंने अपने शब्दों में आरती की। उसके बाद जो शब्द उन्होंने मेरे नाम लिखा था वह निम्नलिखित है—

चेत चेत अभी चेत मेरे भाई।
राह से कुराह गया भूला भरमाना।

मुझे लिखते हैं भई ! चेत तू राह से कुराह हो गया है —

चेत चेत चेत अभी चेत मेरे भाई।
राह से कुराह भया भूला भरमाना।
कहाँ बसे कहाँ बसे ठौर न ठिकाना।
संगी नहिं साथी नहिं कोई न सहाई।
ताक में हैं चोर डाकू कोई न सहाई।
सोचा सो पूँजी खोया, पूँजी खोय रोया।
फल पाया आप बुरा जैसा बीज बोया।
यह तो नहीं तेरा देश, देश है विगाना।
यहाँ सब बेगाने बसे कोई न समाना।
गुरु ने उपदेश दिया और मुझे चिताया।
संत पंथ धार हिये, कटे मोह माया।

मेरी मोह माया नहीं कटती थी। उस मोह माया को काटने के लिये मुझे यह काम दिया था। जब तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारा अपना ही विचार है। मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है मेरा अपना ही विचार है। मेरा मन ही गुरु और चेला था। मैं तुम लोगों को आजाद कर जाना चाहता हूं जो आजाद होना चाहते हैं।

बन्धे को बन्धा मिले छूटे कौन उपाय।
कर संगत निर्बन्ध को जो पल में लये छुड़ाये।

मैं निर्बन्ध पुरुष हूं। यह ठीक है कि मैंने मन्दिर बनाया है और मुझे रुपये की आवश्यकता रहती है मगर मैं इसकी परवाह नहीं करता जब तक रुपया आता है मन्दिर चलाऊँगा। मैंने किसी का ऋण नहीं देना है कि जरूर ही अस्पताल खोलूँगा। अगर धन नहीं आयेगा तो अस्पताल बन्द कर दूँगा। इसकी मैं चिन्ता नहीं करता। यह तो मेरा कर्म और खेल है। तुम्हें बता रहा हूँ कि दाता ने मुझे कहा था कि अपने बच्चों का पेट काटकर कभी भी दान मत किया करो। तुम भूल में हो हम लोग तो ठग हैं। जो गुरु सच्ची बात नहीं बताते उन्हें मैं ठग समझता हूँ। जो यह कहते हं भई ! नाम ले लो और दशोध्र देते रहो चाहे तुम्हारे बच्चे भूखे मरते रहें। यहाँ पर जो तुम्हारा धन आता है हम गरीबों की सहायता करते हैं। क्या उसका फल मुझे मिलेगा ? नहीं उनको फल मिलेगा जिनका रुपया आता है। इसलिए बार बार कहा जाता है कि

शिष्य को ऐसा चाहिए जो गुरु को सब कुछ दे।

मगर गुरु के लिये क्या शर्त है।

गुरु को ऐसा चाहिये शिष्य का कुछ न ले।

यह परोपकार का काम है। आप यहाँ आते हैं। शामयाने, लाडस्पीकर और लंगर की भी आवश्यकता है। यह संसार का व्यवहार है। मगर अगर लंगर लगा देने से कोई आदमी तर जाये तो सारा संसार तर जाता। हर जगह बहुत सतसंग होते हैं। मैं जानता हूं कि तुम मेरी बात को नहीं सुनोगे मगर मैं अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं। मेरे जिम्मे यह कर्तव्य था कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने जो समझा वह कहता हूं। यह दावा नहीं करता कि जो मैंने समझा है ठीक है या गलत है। शब्द क्या है ? वह असली शब्द है। पहले बाहर के गुरु का वचन शब्द है फिर जब मैं अन्तर में शब्द धारण करता हूं तो शब्द होता है और रोशनी भी होती है फिर मैं उस चीज की तलाश

करता हूँ कि प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने वाला कौन है। जब कभी दो या तीन महीने बाद उसकी ओर ध्यान जाता है तो वहाँ ऐसी अवस्था आ जाती है कि जहां मैं न तू न शब्द न स्वामी है। बेखबरी आ जाता है। कुछ पता नहीं कि क्या होता है। तो मैं इस परिणाम पर आया हूँ कि अगर मैं वहां पहुंचकर कुछ कर सकता होता तो मान लेता कि मैं कुछ बन गया हूँ। मैं न सही क्या दूसरे गुरु कुछ कर सकते हैं? सब ये पांच-पाँच छः छः साल बीमार हुये, उनके लड़के बदमाश हो गये, अपनी स्त्रियों से अनबन रही तो ये कुछ न कर सके। फिर मुझे शब्द योग से क्या मिला? यह मिला कि मैं कौन हूँ। मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। जब शब्द खुलता है उस में जो चेतना आ जाती है वह मैं हूँ। जब वह चेतनता शब्द से अलग हो जाती है तो न चेतनता हैं और न शब्द है। अकह, अपार, अगाध और अनामी अपनी हस्ती खो दी। मैं तो उत्साह पूर्वक कहता हूं कि प्रकृति के भेद का पूरा पता न कबीर को लगा, न ऋषियों को लगा, न स्वामी जी को लगा, न गुरु नानक साहिब, न दातादयाल को और न मेरे बाप को लगा।

दौड़त दौड़त दौड़या जहाँ लग मन की दौड़।
दौड़ गया मन घिर गया चीज ठौर की ठौर।

अपना आप ही समाप्त हो जाता है न मैं न तू है।

कहाँ किसमें है कहां किसमें तू है।
सब कहने सुनने की गुफ्तगू है।

यह मेरे जीवन का परिणाम हुआ। मगर यह तब होगा जब तुम आप साधन सतसंग करके अपने आपको देख लोगे तब पता लगेगा। मेरी आयु सच्चाई की तलाश में व्यतीत हो गई। दाता! आपके चरणों में गया था जो मेरी समझ में आया वह कहता हूं। मुझे भी अधिकार है कि मैंने जो सच्चाई समझी उसे कह जाऊँ। तुम मेरे बहिन भाई हो। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। मैं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

न किसी को चेला बनाना चाहता हूँ और न अपने पीछे लगाना चाहता हूँ। तुम्हें सच्ची बात बता जाना चाहता हूँ। क्योंकि दाता ने मुझे कहा था—

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेष।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देश।
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी।।

मैं जो मुख से कहता हूं वही मेरा नामदान है। मैंने लोगों को मकान बन्द करके नाम नहीं दिया। मैं जो कहता सतसंग करता हूँ उसे कई आदमी सुनते और अमल करते हैं, उन्हें लाभ पहुंच जाता है। जो अमल नहीं करते उन्हें लाभ नहीं पहुंचता है। मेरे जिम्मे एक कर्तव्य था। गुरु ऋण था।

लूट पड़ी लूट से बचाले धन अपना।
सह न काल कर्म चोट सोध ले मन अपना।

मैंने बारह साल जो कमाया सब दातादयाल के चरणों में भेट कर दिया। मेरा जज्बा था क्योंकि मैंने सुना था कि गुरु की सेवा करो तब तुम्हें वह घर मिलेगा। अढ़ाई हजार रुपया उन्होंने मेरी स्त्री को प्रसाद के रूप में वापिस कर दिया। साढ़े तीन हजार रुपया अपने द्वारा मेरे नाम पंजाब नेशनल बैंक लाहौर में जमा किया जो कि मुझे वापिस कर दिया जब तीस साल बाद गीदड़वाहे आये तो तीस हजार रुपया मेरी स्त्री को दे दिया और मुझे कहा इसमें से जो तुमने खर्च नहीं करना तुम्हारा कोई अधिकार नहीं। यह तुम्हारी स्त्री और बच्चों का हक है। तुम अपनी कमाई आप करके खाओ। मेरे अन्तर जज्बा था, मैं देखना चाहता था कि सच्चाई क्या है? राधास्वामीमत या कबीर मत क्या कहता है? सबकी उन्होंने ऐसी तैसी करी हुई है। व्यास भी भूल गया, कृष्ण भी भूल गया। ये सब काल के अवतार थे। मैं ब्राह्मण हूँ। कोई इस बात को सुनता है मुझे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ऐसा सुनकर दुख होता था। अगर सिखों को गुरु नानक साहिब विरुद्ध और मुसलमानों को कुरानशरीफ के विरुद्ध कह दो तो सि फोड़ देंगे। मैं देखना चाहता था कि असलियत और सचाई क्या है? इसका पता मुझे सतसंगियों ने दिया। इस प्रकार पिछले जमाने में स्पष्ट वर्णन का दस्तूर नहीं था।

साँच कहूँ तो मारसी यह तुरकानी जोर।
बात कहूँ परलोक की कर गह बाधे चोर॥

कबीर साहिब ने भी कहा, मगर इशारे में कहा स्वामी जी और बाबा सावनसिंह जी ने भी इशारे में कहा क्योंकि उस समय विदेशी का राज्य था। अब अपना राज्य है। मैंने इस भेद को क्यों खोला? इसलिए कि लोगों को पता लग जाये कि जिस धर्म या मालिक के लिए तुम आपस में बटे हुये हो इकट्ठे हो जाये। देखते हो कि संसार में क्या हो रहा है पाकिस्तान में क्या हुआ। मुसलमानों, सिक्खों और हिन्दुओं के सिर कट गये। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि उन्हें सचाई का पता नहीं था। इसलिए मैंने इस संसार को खोला है और कोई बात नहीं।

मैंने आप संसार वालों को बता दिया कि तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। मैंने स्वप्न का उदाहरण तुम्हें दे दिया। सदा अच्छा विचार रखो। संतान को संतान के विचार से पैदा करो। खुद से (Uncalled for) संतान कभी तुम्हारे लिये और देश के लिये लाभदायक नहीं हो सकती। कौम (जाति) को बनाने वाली माताएँ होती हैं। माताओं की जिम्मेवारी होती है और कुछ आदमी की भी है। स्त्री केवल सन्तान पैदा करने के लिए है न कि विषय विकार के लिए है। अब जमाना बदल गया है इसलिए हम सब दुखी हैं। अच्छी सन्तान पैदा करो। जिस प्रकार के विचार माँ बाप के मिलने के समय होंगे वही बच्चे पर प्रभाव पड़ेगा। यह मैं क्यों कहता हूँ? क्योंकि मैंने अजमाया हुआ है। पहली स्त्री के समय मैं कृष्ण का

ध्यान करता था। जब कि मैं नहीं आया था। उस समय मैंने अपनी स्त्री को कहा कि तेरे लड़का होगा। लड़का पैदा हुआ। जहाँ पैदा हुआ वहाँ सामने ताराचन्द ज्योतिषी का मकान था। उसकी लड़की विधवा थी उसने पूछा सामने मकान में स्त्रियें क्यों इकट्ठी हो रही हैं? उसने कहा कि मस्तराम के घर पोता हुआ है। हर काम वाले को अपना अपना खतत होता है। उसने समय देखकर अपने कागज पर टेवा बनाया। उसने कहा लड़का नहीं बचेगा। उसकी लड़की ने पूछा क्यों? उसने कहा कि जिस ग्रह में पैदा हुआ है यह या तो योगराज होगा या राजा होगा। इसका बाप तारबाबू है और बाबा सिपाही है। पता नहीं यह किस भाग से यहाँ आ गया। कुछ लेने देने का कारण था। फिर मेरा बाप उसके पास गया कि टेवा बनादे वह कहने लगा अगर पांच साल जीवित रह गया तो फिर टेवा बनाऊँगा यह तुम्हें और तुम्हारे देश को तार जायेगा। वह अढ़ाई साल के बाद मर गया। यह मेरा अनुभव है। आप गृहस्थियो बिना किसी लज्जा के चाहता हूं कि जब स्त्री पुरुष मिलते हैं तो अच्छे विचार रखा करो अच्छी सन्तान की इच्छा किया करो तुम्हारी सन्तान अच्छी होगी।

मेरी बड़ी लड़की साधी उन्मत है। मैं चाहता था कि मेरे जो बच्चा पैदा हो वह न कामी, न क्रोधी, न मोही, न लोभी, और न मानी हो। मैंने गुरु महाराज जी को लिखा। उन्होंने कहा जैसा तुम चाहते हो हो जायेगा। मैंने उसका विवाह कर दिया लेकिन उसके पति ने उसे नहीं बसाया। अब वह मेरे घर में रहती है। मैं ही जानता हूँ कि उसके कारण मुझे कितना खर्च सहन करना पड़ता है।

मैं अज्ञान के प्रेम का हाल बताता हूँ। मेरी अज्ञान का भक्ति थी दातादयाल अमरीका चले गये। मैं उनकी कुटिया में गया और उन की पुरानी खड़ाओं, अँगोछे और कपड़े धोतीं आदि ले आया। मैंने अपनी स्त्री को कहा कि जब बच्चा पैदा हो जाये तो इन कपड़ों से

उसे साफ कर देना। मेरी स्त्री ने ऐसा ही किया। अब वह लड़की सदा गन्दे कपड़े ही पहनती है यद्यपि किसी चीज की कमी नहीं है जहाँ तुम परमार्थ के लिए आते हो वहाँ स्वार्थ की बातें भी ले जाया करो। अच्छी सन्तान पैदा करो। छोटे बच्चों को मत मारा करो तुम्हें पता नहीं उनकी आह पड़ती है। मैं अपनी बावत आपको बताता हूँ। मेरा छोटा भाई बजीरचन्द था। जब मां रोटी पकाने लगती थी तो उसे खिलाने के लिए मेरी गोद में दे देती थी मैं उसे खिलाता था। एक दिन मैं गिर गया। नीचे बजीरचन्द पड़ा और ऊपर से मैं गिर गया। उधर से माता ने आकर मुझे पांच सात थप्पड़ जड़ दिये और फिर लड़का मेरी गोद में देकर कहा इसे खिलाओ। अब वह जगह मुझे याद आती है और मैं पछताता हूं। एक रास्ते के बीच सड़क जाती थी। वहाँ खड़े होकर मैंने कहा ऐ भगवन ! इसके कारण मुझे हर रोज मार पड़ती है या यह मर जाये या मैं मर जाऊँ। तीसरे महीने वह मर गया। यह मेरा अनुभव है। बच्चों को मत मारा करो लेकिन आँख रखा करो। बड़ा आदमी तो जान बूझ कर गलती करता है लेकिन बच्चे को तो पता ही नहीं कि वह गलती कर रहा है। अगर बड़े आदमी को गलती करने पर दो थप्पड़ मार दो तो कोई बात नहीं। वह महसूस करता है कि उसने गलती की है।

बेशक राम राम मत जपो पहले अपनी रोटी का प्रबन्ध करो। हम महात्मा लोग रोटी के लिए ही तुम्हारे दरबाजे पर भीख माँगते फिरते हैं। गृहस्थी का कितना अच्छा घर है जिसके दरबाजे पर साधू और भिखारी भीख माँगते हैं। आप अच्छे हो कि सन्त अच्छे हैं नौजवान बच्चों को अपनी कमाई आप करनी चाहिए। जो अठारह साल का बच्चा बेकार है और अपने बाप और भाई पर बौझ बना हुआ है वह मूर्ख है। जो छोटा मोटा काम मिलता है उसे करना चाहिए अपनी आप उन्नति हो जायगी। ये संसारी बातें हैं। जहां

आप परमार्थ के लिए आते हो वहाँ ये भी ले जाओ।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! तू ने मकड़ी का जाल बनाया हुआ है। क्या तू इसमें आप नहीं फँस जायेगा ? मैं किसमत का मारा हुआ हूँ। मेरे कर्म हैं। गुरु आज्ञावश मुझे यह काम करना है। कोई सुने या न सुने मुझे इससे क्या मतलब। दाता ने आज्ञा दी थी कि निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना और उन्हें गुरु के देश पहुंचा देना। गुरु का देश वह है जो मैंने आपको बताया है कि जब दो तीन महीने बाद शब्द से परे होता हूं तो वहां न मैं, न तू और न संसार हैं। मैं कौन हूं ? सन्तों ने उसे अकह, अपार, और अनामी कहा है। आया वह भगवान अकह, अपार और अनामी है या कि नहीं। वहाँ पर पहुंचकर सन्तों की अपनी सुरत ही गुम (लोप) हो जाती है। असल में अकह, अपार, अनामी क्या है यह सन्तों को भी पता नहीं। इसलिए सबने बेअन्त कह दिया और किसी ने हैरतरूप कह दिया।

हो सकता है कि जो कुछ मैंने समझा है सारा गलत हो। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। मेरी नीयत साफ है। क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ ? यह एक प्रश्न है। एक तो सच्ची बात बताता हूं दूसरे शुभ भावना देता हूँ। दाता से प्रार्थना करता हूँ कि ऐ दाता ! आपने यह काम दिया था। जो लोग मेरे पास आते हैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि जिस नीयत, भाव, इच्छा से आते हैं वे पूर्ण हो जायें। इसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं। आपकी इच्छा करे आया करो न करे मत आया करो।

आज मीटिंग है और प्रधान चुनना है। भारद्वाज के चरणों में मेरी विनती है कि वह इस भार को सम्भाले। ब्राह्मण होने के नाते मेरा आप पर हक भी है। जहां तक हो सकेगा आपको अधिक कष्ट नहीं होगा। भारद्वाज मेरे पास शुभ भावना है वह देता हूँ। मैं सचाई बर्णन कर चला। राधास्वामी !

प्रवचन

हजूर परमदयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर दिनांक १२-११-७८

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान।
मूल नाम गुरु नाम है, मूल रूप गुरु रूप।
मूल भजन गुरु शब्द का, गुरु निर्वान के भूप॥
गुरु की प्रीति हिये में धार, मिलेगा तब सच्चा गुरु ज्ञान॥
तीरथ में है पत्थर पानी, व्रत में कठिन कलेश।
वाद विवाद से मन हो चंचल, तत्व गुरु उपदेश॥
करे जो गुरु को संगत प्रानी, वह फिर पड़े न मन की खान।
गुरु विष्णु गुरु शिव को मूरत, गुरु को ब्रह्मा जान।
गुरु ब्रह्मा गुरु पर ब्रह्मा है, अपनी बुद्धि पिछान॥
गुरु की भक्ति सब का सार है, और सब मरण अज्ञान।
भटक भटक कर भट को जग में, भटका बारम्बार।
जाके मन में अटक समाना, जाय न भव के पार॥
तू सोच समझ चित धार, बात यह साँची मन से मान।
राधास्वामी सतगुरु पूरे, धरा सन्त अवतार।
सुरत शब्द मत योग बताया, सार सार का सार॥
बिन गुरु शक्ति ज्ञान नहीं पावे, सब संतन ने किया बखान।

राधास्वामी !

मैंने एक दिन पहले यह शब्द सुना था। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि फकीरचन्द ! तू प्रकट रूप में गुरु नहीं बना न ही नाम देता है लेकिन तू गुरु का काम करता है लोग तेरा बहुत मान करते हैं। तू बता कि तू ने सन्त मत को क्या समझा ? यह जो कुछ यहाँ लिखा हुआ है क्या यह ठीक है ?

मैं अपनी आत्मा को साफ रखना चाहता हूँ ताकि मुझ पर गुरु बनने का कोई पाप न रहे किसी से धोखा फरेब न हो। यहाँ लिखा हुआ है कि तेरी मनसा पूरी होगी तू गुरु का ध्यान कर। संसार में कितने गुरु हैं। एक पत्थर उठाओ तो दस गुरु निकलते हैं। वह कौनसा गुरु है जिसका ध्यान करने से तुम्हारी मनसा पूरी हो सकती है ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा को साफ रखने के लिए अपनी ही आत्मा को सत्संग करा रहा हूँ, आप लोगों को नहीं करा रहा हूं।

लोग मेरा रूप बना लेते हैं। स्कूल के लड़के मेरे उस रूप को डैक्स के नीचे बिठाकर विज्ञान का परचा हल करवा लेते हैं मेरा रूप डूबते हुये को बचा लेता है, मरते समय लेजाता है या किसी की कोई और सहायता होती है लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। न मैं किसी के पर्चे हल करवाने जाता हूं, न किसी डूबते हुए को बचाता हूँ न किसी को मरते समय लेजाता हूं और न किसी को दवाई बताता हूँ। लोग मेरा ध्यान करते हैं मुझे कई आदमी मिले पूछने लगे, बाबाजी ! क्या आप डाक्टर से दवाई लेते हैं ? हाँ लेता हूं। हम नहीं लेते। मैंने पूछा, आप क्या करते हो ? हम जब बीमार होते हैं तो आपको याद करते हैं, आप प्रकट हो जाते हैं और दवाई का नाम बता देते हैं। हम बाजार से दवाई लाकर खाते हैं और स्वस्थ हो जाते हैं। जब मैं बीमार होता हूँ तो डाक्टरों के पास जाता हूं। कुछ दिन हुए बम्बई की एक निर्मला नाम की स्त्री श्रीनगर बदरीनाथ, अमरनाथ गई। वह वहाँ नदी में नहाने गई। जब वह नहाने लगी तो पानी उसे दस बारह गज बहाकर लेगया वह लिखती है कि बाबाजी ! आप आये, आपने मुझे बाजू से पकड़ा और किनारे पर लेआये और मुझे कहा कि अभी तक तूने बहुत काम करना है। उस स्त्री ने दो पेटियाँ एक सेब और दूसरी आलू बुखारे की भेजीं और मुझे पत्र द्वारा पूछा कि मैंने और क्या काम करना है ? अगर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मैं वहाँ पर उसे बचाने गया हुआ होता तो उसे बताता। मैंने उन सवों की ओर देखा तक नहीं, खाना तो एक ओर रहा। अगर मैं उन्हें खाजाता तो क्या मैं दोषी नहीं था? नहीं था? क्योंकि मैं उसे बचाने नहीं गया था। जो अज्ञानवश मुझे देता है, मैं उस आदमी से कोई पैसा या चीज नहीं लेना चाहता। समजवूझ के साथ बड़ी खुशी से दो। यह मन्दिर मेरा अपना नहीं है पब्लिक का है और पब्लिक के काम आयेगा मगर मैं आप लोगों को धोखा नहीं देना चाहता और न हीं धोखे में रख कर किसी से धन लेना चाहता हूँ। मैं इसे दोष समझता हूँ।

मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा हर एक धर्म, पंथ वालों ने अपना अपना अलग अलग मार्ग बताया। शिव पुराण वालों ने शिव को ऊँचा रखा, विष्णु पुराण वालों ने विष्णु को ऊँचा रखा देवी पुराण वालों ने देवी को ऊँचा रखा और गुरु-मत में इन गुरुओं ने गुरू को सब से ऊँचा रखा। इससे मुझे विश्वास होगया कि काम तो होते हैं और बहुत आदमी अपने अपने गुरुओं से लाभ उठाते हैं। आप लोग भी उठाते होंगे। मैंने दाता दयाल से लाभ उठाया। फिर गुरू कौन हुआ? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि फकीरचन्द! वह गुरू कौन है जो तुम्हारी मनसा को पूर्ण करता है और किसी को ध्यान करने से तुम्हारे सब काम होते हैं? मैं सचाई बता जाना चाहता हूं कि अनुभव ने सिद्ध किया है कि वह गुरु इन्सान का अपना ही मन है विश्वास और श्रद्धा है। क्योंकि अगर मैं गुरु होता तो मुझे पता होना चाहिये था कि मैं वहाँ पर गया, मरते समय लेगया यही बात दाता दयाल ने कही है कि मन ही मानव का गुरु है मगर वह उसे समझता नहीं। इस कारण इस मन को साफ करने के लिये बाहर के पूर्ण पुरुष की संगत की आवश्यकता है जो आदमी को अपने मन का ठीक करने का मार्ग या ढंग बताये।

यह मन समझन जोग, साधु यह मन समझन जोग।
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान, मन ही मोक्ष और भोग।
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग।
मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग।
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग।
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्यौहार जगत में, नहीं आने योग।

यह मेरे गुरु महाराज दातादयाल का शब्द है। अर्थात जितना खेल है सब तुम्हारे अपने ही मन तथा आत्मा का है। पहला शब्द था—

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान।

वह किस गुरु का ध्यान करे? मैं अनामी धाम से इसीलिये आया हूं कि बताजाऊँ कि इन धर्मों और पंथों ने इतना पाखण्ड बनाया हुआ है कि हम गृहस्थियों को मूर्ख बनाकर लूटा जारहा है, मत्थे टिकवाये जा रहे हैं और अपनी सम्पति बनाकर अपने पोतों और दोहतों को दी जारही हैं। ससार जानता है। मैंने आपको सिद्ध कर दिया कि कोई बाहर का गुरु आकर किसी की सहायता नहीं करता। अपने डेरे सम्पत्तियें, नाम बड़ाई बनाने के लिये हमें धोखा दिया गया है। (तुम्हारा मन है) मैं समझता हूँ कि जितना अज्ञान हमें इन धर्मवालों ने दिया उतना किसी ने नहीं दिया।

गुरु का असली रूप न जानने से ही धर्मो पंथों के झगड़े हैं गुरु तुम्हारा मन है। मगर इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तुम्हें बाहर के गुरु की आवश्यकता है। इस वास्ते स्वामीजी ने भी कहा है कि पूरे गुरु को ढूंड़ो—

गुरु तो पूरा ढूंढ तेरे भले की कहूँ।

गुरु नानक साहब ने भी पूरे गुरु की बात कही है। पूरे गुरु का

अर्थ पूरा ज्ञान, पूरी समझ और पूरा विवेक है मगर यह जल्दी नहीं आती। हरएक आदमी के लिये यह सतमत नहीं है।

अब मैं प्रश्न करता हूँ कि जो दूसरे गुरुओं का ध्यान करते हैं क्या उनके काम पूरे नहीं होते? उनके काम भी पूरे होते हैं। हर एक के गुरु का रूप उनकी सहायता करता है। मुझे जो सत्संगी मिलते हैं सब कहते हैं। जो असल में शक्ति है वह तुम्हारे मन के विश्वास में है। क्योंकि इन्सान अपने मन के ऊपर कोई विश्वास नहीं कर सकता इसलिये मन को सहारा देने के लिये बाहर के किसी न किसी रूप का सहारा लेना पड़ता है। अगर बाहर का कोई पूर्ण पुरुष मिला हुआ है तब तो तुम्हें मंजल पर पहुंचा देगा अगर अधूरा है तो सिद्धि शक्ति आजायेगी, पुत्र हो जायेगा और धन भी मिल जायेगा मगर इस मन के चक्कर से तुम नहीं निकल सकते, जब तक किसी को पूरा गुरु न मिले अर्थात पूरी समझ न मिल जाये। मन के चक्कर से कौन निकलना चाहता है? मेरे पास कितने आदमी संसार की आशाओं को लेकर आते हैं। यह जो एक आदमी आया हुआ है, इसका कोई मित्र हो उसका कोई लड़का नहीं है लोग मुझसे प्रशाद ले जाते हैं। मेरे पास पचास पचास साल की चार स्त्रियाँ आईं जिन्हें मासिक धर्म नहीं आता था। मुझसे प्रशाद लेगईं और उनके सन्तान होगई मेरी अपनी लड़की के विवाह को चौबीस साल होगये। मैंने कई बार उसे प्रशाद दिया, उसके कोई बच्चा नहीं हुआ। क्या मैं बच्चा देता हूँ? कौन देता है? ऐ इन्सान! तेरा अपना कर्म और विश्वास काम करता है। क्योंकि दाता दयाल और बाबा सावनसिंह जी महाराज ने मेरे जिम्मे कर्तव्य लगाया था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं क्या शिक्षा बदलूँ? एक रूप पर विश्वास रखो और उस रूप को पूरा समझो। क्योंकि तुमने अपने मन से उसे पूरा समझा हुआ है, तुम्हारे अपने ही मन का विचार और विश्वास

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

तुम्हारा काम करेगा न कि बाहर का गुरु करेगा। यह बिलकुल सच्ची बात है। जिसकी इच्छा करे मेरे सत्संग में आये जिसकी इच्छा न करे न आये। जिसकी इच्छा करे मेरी बात को सुने, मेरी कोई किताब पढ़े, जिसकी इच्छा न करे, वह न पढ़े। जिसकी इच्छा करे मन्दिर में चार पैसे देजाये जिसकी इच्छा न करे वह न दे। मैं अपने चार दिन के जीवन को नष्ट करके नहीं जाना चाहता नहीं किसी को धोखा फरेब देना चाहता हूँ।

किस गुरु का ध्यान करना है? जहाँ तुम्हारा विश्वास बैठता है उसे पूरा समझो। इस शब्द में भी यही आया है। हिन्दू शास्त्र भी यही कहते हैं—

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरुदेव महेश्वरा।
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवेनम: ॥

तुम्हारा इष्ट पूर्ण है। उदाहरणत: एक स्त्री व्यभिचारिणी है, जब उसका लड़का उसे देखेगा तो उसके मन की दशा और होगी क्योंकि उसने उस स्त्री में अपनी माँ का इष्ट रखा हुआ है। इष्ट माँ पूर्ण है। माँ पवित्र शब्द है इस वास्ते- माँ की बुराई उसके मस्तिष्क में नहीं आयेगी। दूसरा आदमी उस स्त्री को बहन समझता है, उसकी और दशा होगी, उसी स्त्री स्त्री को उसका पति देखता है उसकी दशा और होगी और उसके यार के मन की दशा और होगी तो क्या सिद्ध हुआ? कि जो तुम्हें, मुझे या किसी को मिलना है वह तुम्हारे अपने ही विचार और विश्वास का फल मिलना है। जो कुछ किसी को मिला वह उसके विश्वास और श्रद्धा का ही फल मिला। ऐ इन्सान तेरे मन के विचार में बड़ी शक्ति है। मैंने सचाई वर्णन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपकी खोपड़ी में न बैठे तो मैं जिम्मेवार नहीं हूँ।

क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य था कि शिक्षा को बदल जाना इस वास्ते मैंने शिक्षा को बदला है कि ऐ इन्सान! अपने विचार को

ठीक रख। सबसे पहले सन्तान पैदा करते समय अपने विचार को ठीक रखो। मेरे पास हर रोज दुखी जोवों के पत्र आते हैं। वे सन्तान से दुखी हैं। वे क्यों दुखी हैं? क्योंकि उन्होंने सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा नहीं किया है। विषय विकार का जीवन था। वच्चे पैदा किये अब जो Uncalled for Child बिना बुलाया बच्चा आया है, उससे तुम यह आशा करा कि वह तुम्हारा आज्ञाकारी रहेगा ऐसा नहीं हो सकता और न होगा। अपने कर्म का फल आप भोगो, तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। मैं क्यों कहता हूँ? अगर मैं दूसरों के उदाहरण दूँगा तो वे नाराज हो जायेंगे इसलिये अपना उदाहरण देता हूं। अपने घर का उदाहरण देकर अपना मुँह काला करके तुम लोगों को सचाई वर्णन किये जाता हूं।

मेरी एक लड़की है। जब मां उसे कुछ कहती तो वह माँ को जबाब दे देती। वह पढ़ी लिखी है और एक अच्छे अफसर को स्त्री है। मेरी स्त्री मुझे कई बार कहती थी कि तू लोगों को उपदेश करता है, अपनी लड़की को उपदेश नहीं करता। मैंने एक लड़की से पूछ बेटी! क्या बात है? वह रोपड़ी और कहने लगी पिता जी! पता नहीं मुझे क्या हो जाता है। जब माताजी कुछ कहती है तो मेरे मुँह से निकल जाता है। पीछे से मैं दुख मानतो हूँ। मैं जानता था कि वह ऐसा क्यों करती है। मेरे सन्तान थी मुझे सन्तान की आवश्यकता नहीं थो। मेरी स्त्री को आवश्यकता नहीं थी। मैं कामी हुआ क्या पेट में आगया। मुझे याद है मेरी स्त्री ने पहले दो महीने दवाई खाई कि Abortionहो जाये मगर Abortion नहीं हुई। जिस आने वाले बच्चे को मां Welcome नहीं करती वह मां का कहना कैसे मानेगा। यह शिक्षा है जो मैं बदले जारहा हूँ। मैं कहता हूं कि तुम राम राम बेशक न जपो अपने विचार को ठीक करो। क्यों? जिन बड़े-बड़े आदमियों, महात्माओं ने राम राम जपा व बहुत बुरी मौत मरे और बहुत कष्ट उठाये। इसलिये मैंने मानव

मन्दिर बनाया है केवल इस विचार से कि शिक्षा को बदल जाऊँ। मेरे सिर पर गुरु ऋण है। मैं यह काम नहीं करना चाहता था इसलिये मैं १९४२ में बाबा सावनसिंह जी महाराज के पास गया था। मैंने कहा महाराज ! मैं यह काम नहीं करना चाहता। कहने लगे क्यों ? मैंने कहा महाराज मैंने सच कहना है। संसार सचाई के पीछे डन्डा लिए फिरता है। वह पवित्र विभूति थे। वह कहने लगे फकीर मुझसे सच नहीं कहा गया क्योंकि संसार सच का अधिकारी नहीं है दूसरे मेरा डेरा था, मैं यह जानता हूं। तू निर्भय होकर काम कर, मैं तेरा रक्षक रहूँगा। इसलिये मैं शिक्षा को बदले जा रहा हूं।

गुरु की महिमा क्या है ? प्रेम और विचार से किसी एक रूप को मानलो और उसे पूरा समझलो जिस प्रकार लड़के ने माँ को अपनी मां मान लिया और उसके दोष (अवगुण) अर्थात माँ के दोष उसके सामने नहीं आते जब कोई विपत्ति आती है तो हम कहते हैं हाय माँ ! जब हमें संसार में कोई दुख आता है चाहे हम बूढे या जवान हों, हमारे मुँह से निकलता है हाय माँ ! क्यों ? क्योंकि माँ का इष्ट था। इसलिये गुरु इष्ट है। जो आदमी गुरु के कामों को देखता रहता है वह दोषी है। वह मंजल पर नहीं पहुँच सकता। गुरु पूर्ण है। उसमें पूर्णता देखो। मगर उसे अपने अन्तर समझो बाहर मत समझो। जो आदमी इस ढंग से अपने इष्ट का ध्यान करता है डसकी मनसा पूरी होती है अवश्य होनी चाहिये। लोगों की मनसा पूरी होती है और मेरी भी होती है। मैंने इसका प्रमाण आपको दे दिया कि मैं कहीं जाता आता नहीं। हजारों लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनका जितना प्रेम होता है मेरी मूर्ति उनके अन्तर बन जाती है और उनके काम बन जाते हैं जहाँ तक ऊनके अपने निजी काम का सम्बन्ध है। मेरे हर रोज के अनुभव हैं। जिनका ध्यान बन जाता है उनके सब काम बन जाते हैं। मैं नहीं कहता कि

कि तुम मेरा ध्यान करो मैं तो कुछ नहीं करता। मैं तो कुछ करता नही। मैं गुरु नही हूँ। मैं तुम लोगों को ज्ञान समझ और विवेक देता हूँ ताकि तुम भटका न खाओ और जगह जगह टक्करें न खाओ क्यों भटकते फिरते हो। इस भटकने में क्या रखा है। जो कुछ है वह तुम्हारे मन के अन्तर है।

मनसा होगी तेरी पूरी, मनसे करले गुरु का ध्यान।

मैंने सिद्ध कर दिया कि जो कुछ दाता ने लिखा है यह सोलह आने सच है। इसमें कोई झूठ नहीं। मगर उसके साथ जो अनुमान है वे भी पूरे होने चाहिये। एक आदमी गुरु गुरु तो करता रहता है मगर उसके विचार गन्दे हैं चारसौ बीस और हेरा फेरी करता है दो घन्टे तो अभ्यास भी करता है मगर सारा दिन किसी के साथ लड़ाई, शत्रुता झगड़ा किसी के साथ मुकदमा तो फिर वह आशा करे कि उसकी मनसा पूरी हो जायेगी; यह नहीं हो सकता। क्योंकि वह सारा दिन जो कुछ सोचता रहता है उसका भी तो प्रभाव होना चाहिये। एक आध घन्टे या बीस मिनट के अभ्यास से जो तुममें शक्ति आती है वह उतनी शक्तिशाली नहीं है जितना तुम सारा दिन सोचते रहते हो, यह हो, यह हो और वह हो।

मूल नाम गुरु नाम है, मूल रूप गुरु रूप।
मूल भजन गुरु शब्द का गुरु निर्वाण के भूप॥

गुरु को क्या समझना चाहिये ? गुरु को मोक्ष, धन अर्थात सब कुछ देने वाला समझना चाहिये तब तुम्हारा काम बनेगा। अगर गुरु पर सारा विश्वास नहीं है तो गुरु धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं। यह मूर्खता है। जो लोग गुरुओं के पीछे दौड़ते हैं। हम गुरु के पास क्यों जायें ? वहाँ से हमें गुर मिलता है। गुरु बात बताता है। वह जो बात बताता है, वाणी कहता है और समझ देता है वह गुरु है। कोई भी बाहर का गुरु नहीं। गुरु तो इन की वाणी है जो ये हमें उपदेश दे गये और वाणी समय अनुसार की

जाती है जो गुरु पांच सौ साल पहले प्रकट हुआ उसकी बाणी, हिदायत (उपदेश) इस समय काम नहीं करता । वह उसी समय के लिये थी । अब वह काम नहीं करेगी जमाने के बदलने के साथ सदा गुरुमत भी बदलता रहता है ।

गुरु ने चोला बदलया सिदक न हारे सिख ।

संसार ने यह समझा हुआ है कि अगर एक गुरु मर गया तो उसकी जगह जो दूसरा गुरु बैठा है उसने चोला बदला है । यह गलत है । गुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है जिससे इन्सान की मनोकामनायें पूर्ण हों, उसे शान्ति मिले और उसका आवागवन समाप्त होजाये । हर जमाने (युग) के हालात अलग होते हैं इसलिये गुरु सदा समय समय पर प्रकट हुआ करते हैं जो उस जमाने के हालात अनुसार जीवों को उपदेश करके अन्तिम अवस्था पर पहुंचाते हैं । हमारे जमाने में पहले क्या था ? राजा का शासन था और हिन्दू राजा को ईश्वर का रूप समझते थे । अब क्या है ? अब राजाओं के पुतले जलाये जाते हैं । क्या अब पिछली काम आता है ? तुम्हारी बात को कौन सुनेगा । पिछला शासन कहां गया ? जब अपने इष्ट को पूर्ण मानोगे तब मनसा पूर्ण होगी । मैं नहीं कहता कि मेरे रूप को पूर्ण मानो ! जिसे तुम चाहते हो उसे पूर्ण मानो । जिसे तुम चाहते हो उसे पूर्ण मानो । उसे ऐसा मत समझो कि यह अमुक है, अमुक का लड़का है, अमुक जगह पैदा हुआ था, इसने यह काम किया और यह अमुक जगह मर गया । जो आदमी गुरु को ऐसा समझता है वह पार नहीं जा सकता । यही बात आदि गुरु संतों में आदि कबीर साहिब ने कही है—

गुरु को मानस जानते, ते नर कहिये अन्ध ।
दुखी होंय संसार में, आगे यम का फन्द ।।
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहिं ।
कहैं कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहिं ।।

हम क्यों सुखी नहीं ? क्योंकि हम लोगों ने गुरु को इन्सान समझा हुआ है। इन्सानी गुरु के पास जाकर गुरु के असली रूप को समझने का आवश्यकता है। बाहर का गुरु असली और निज गुरु के रूप को बताता है। इस वास्ते सब से पहली महिमा बाहर के गुरु की है। अगर बाहर का गुरु न हो तो यह समझ तुम्हें आ नहीं सकती। क्योंकि यह समझ कोई गुरु नहीं देता। इसलिये इस समय प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया और शायद इसी वास्ते बाबा सावनसिंह जी महाराज और दाता दयाल ने मुझे कहा हो कि निर्भय होकर काम करजा।

गुरु की प्रीति हिये में धार, मिलेगा तब गुरु ज्ञान।

वह कहते हैं कि गुरु की गति अपने हृदय में धारो तब तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है, प्रेम नहीं है तो मैं चाहे लाख कहता रहूँ, तुम पर क्या प्रभाव होगा ? कुछ प्रभाव भी नहीं होगा इस वास्ते सन्त जो असली सच्चे सन्त हैं वे अपने आप में कोई दोष भगाते हैं ताकि हर एक आदमी उनके पास न जासके। कोई न कोई ऐसा खेल खेल देते हैं कि लोगों को उनसे घृणा आजाती है। यह पिछले जमाने का दस्तूर था। जब तक पूरा विश्वास नहीं है तब तक कोई लाभ नहीं। मेरा अपना विचार यह है कि विश्वास कराना गुरु का काम है। वह गुरु अर्थात बाहर का आदमी गुरु नहीं है जो चेले की बुद्धि को निश्चयात्मिक नहीं कर सकता अर्थात उसे अकली तसल्ली और सचाई का विश्वास नहीं करा सकता। यद्यपि बाहर का गुरु अमल नहीं करा सकता। यह उसकी शक्ति में नहीं है मगर इसे समझाकर उसकी (बुद्धि) को ठीक कर सकता है। अपनी वाणी और वर्णनशैली से उसे विश्वास करा सकता है कि जो कुछ गुरु ने कहा है यह ठीक है। अब इस पर अमल करना या न करना यह तुम्हारा कर्तव्य है। जब बाबा सावनसिंहजी महाराज के पास कोई अभ्यास के लिए जाता तो कहा करते थे लड्डो नाल लदायो नाय घर छडन

जाओ अर्थात ऊँट को लादो सब लदाओ फिर घर घर छोड़ने भी जाओ। वह यह उदाहरण दिया करते थे। बात वही है जो मैं कहता हूँ। सत्संग की महिमा यह है कि सत्संग में आमल गुरु दूसरे की बुद्धि को निश्चयात्मिक बना देता है। गुरु की संसार में अगर कोई दया है तो बस यही है। तुमने गुरु की दया यह समझी है कि कोई गुरु तुम्हारे अन्तर प्रकट होगया। यह सब पाखंड का जाल और धोखा है। क्योंकि मैं तुम्हारे जैसा इन्सान हूँ। मुझे दाता दयाल ने शब्दों में बहुत कुछ कहा मगर जबानी ऐसा सत्संग नही दिया। गुरु की क्या दया होती है ? तुम लोगों ने गुरु की दया को क्या समझा ? मेरे पास बहुत आदमी आकर कहते हैं महाराज ! दया करो। गुरु क्या दया कर सकता है ?

जब दया गुरु की हुई च·णों की भक्ति मिल गई।
सब निबलता मिट गई निश्चय की शक्ति मिल गई ॥

जिस गुरु के बचनों से तुम्हारी निर्बलता अर्थात Weakness of mind चली जाये वह गुरु है। यही गुरुकी दया है कि बुद्धि को निश्चयात्मिक कर देता है।

आगये सत जगत में, और सत का संग होगया।
दुर्गति जाती रही, जब गुरु के मत का होगया ॥

मत राय को कहते हैं। जो गुरु ने राय, (सलाह) दी उसकी राय को तुमने समझ कर उस पर अमल किया तब तुम्हारा बेड़ा पार है।

प्रेम का प्याला पिया, पीते ही मतवाला बना।
मन की सुध बुध खोगई, गोला बना गाला बना ॥
पाँव में मस्तक नवाया, चित से धारा गुरु का रंग।
कीट जिसको पहले सब, कहते थे अब ठहरा भिरंग ॥

गुरु का काम बात को साफ करके समझा देना है शर्त यह है कि दूसरा आदमी समझने के लिये आता है। तुम संसारी हो।

तुम्हारे दुखों का इलाज केवल यही है कि ध्यान करो, ध्यान करो। माँगो मिलेगा, अवश्य मिलेगा। कोई शक्ति नहीं रोक सकती शर्त यह है कि तुम्हारा ध्यान बन जाये। अगर तुम्हारा ध्यान नहीं बनता तो कोई कुछ नहीं कर सकता। तुम्हें जो कुछ मिलना है तुम्हारे अपने मन के विश्वास, श्रद्धा और ध्यान से मिलना है। तुम गृहस्थी हो। मैं नहीं कहता तुम मेरा ध्यान करो। धन चाहते हो तो लक्ष्मी का ध्यान करो। अगर बुद्धि चाहते हो तो सरस्वती का ध्यान करो और अगर मान चाहते हो तो शिवजी का ध्यान करो। मैं किसी धर्म के विरुद्ध नहीं हूँ। मैं असल और सचाई वर्णन करता हूँ हमारे शास्त्र बिल्कुल सच्चे थे। उन्होंने लक्ष्मी, सरस्वती और शिवजो की मूर्तियें बनादी ताकि जीवों का विश्वास बैठ जाये। इन सन्तों ने सबका विश्वास तोड़ दिया, सबका खण्डन कर दिया मगर पब्लिक को सचाई नहीं बताई। मेरी Research का क्या कारण है ? मैं ब्राह्मण हूं। कौन आदमो अपने पूर्वजों की निन्दा सुन सकता है। कबीर साहिब का एक शब्द है।

सब ही मद माते कोई न जाग

वह कहते हैं सारे ही मदगाते हैं अर्थात अहंकार और अभिमान में हैं—

संग हो चोर घर भूसन लाग
पण्डित माते पढ़ पुरान।
योगी मात योग ध्यान ॥

वह कहते हैं योगी भी मदगाते हैं। जो पण्डित पुरान पढ़कर सुनाते हैं, ये भी मदमाते हैं।

तपसी मति मन के भेव।
सन्यास माते कर अहंमेव।
यह सब खण्डन है या कि नहीं।

मौलाना माते पढ़ मुसहाफ,
काजी माते दें इन्साफ ।

काजियों, मौलवियों और हिन्दुओं का भी खण्डन है यह कबीर साहिब को बाणा है। इन वाणियों ने मुझे पागल किया हुआ था। मैं देखना चाहता था कि संतमत में सचाई क्या चीज है ? दाता से मेरा विश्वास नहीं टूटता था लेकिन मुझे बाणी पता नहीं देती थी। जद मैं दाता दयाल को तंग करता था कि मुझे वह असली भेद बताओ कि किस के आधार पर उन्होंने सब का खंडन किया तब उन्होंने १९१८ में मुझे गुरु पदवी देकर कहा था कि तुझे इस भेद को समझाने वाला सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। अब सतसंगियों की सेवा में वह भेद मिल गया। मैंने जो कुछ सीखा वह आप लोगों से सीखा। दया तो दाता दयाल या बाबा सावनसिंह जी की है मगर इस आयु मे आप सत्संगी लोग मेरे सच्चे सत्गुरु हैं जिन्होंने मेरी बाकी कमाई पूरी की और मेरी आँख लोल कर सचाई बताई।

संसारी मति मायक धार।
राजा माते कर अहंकार ॥
माते सुकदेव
हनुमन्त माते धर लंगूरा ।

अब देखो, क्या कबीर साहिब ने किसी को छोड़ा है ? सबको कहा कि ये मदमाते हैं। क्यों मदमाते थे ? क्योंकि वे अपने मन के विचार में बँधे हुए थे। संतमत की असली शिक्षा आवागवन से बचने के लिए है। आवागवन से कौन बचना चाहता है ? ऐसी बाणियों से ही मुझे जीवन में विवश किया कि सचाई की तलाश करूँ कि सचाई क्या है। वह सचाई मुझे तुम लोगों से मिली। केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता और नहीं मुझे पता होता है, मेरे जीवन का तक्ता बदल गया और मैंने शिक्षा को बदल दिया मुझे काम करते हुए चालीस साल होगये अगर मैं गलत होता

तो कोई धर्म पंथवाला तो मेरे विरुद्ध कहता कि मैं गलत हूं—

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान।
मूल नाम गुरु नाम है, मूल रूप गुरु रूप।
मूल भजन गुरु शब्द का गुरु निर्वाण के भूप॥

जब तक तुम गुरु को कोई आदमी समझते रहोगे तुम्हें निर्वाण नहीं मिल सकता। सब धोखा खारहे है। जो कुछ गुरु ने तुम्हें कहा है वह गुरु नाम है—

गुरु वाक्यं मूल मंत्रम

मैं सबको इसीलिए नाम नहीं देता। इसके ग्राहक केवल साधू-सन्त हैं, संसारी नाम के अधिकारी नहीं हैं। पहले इन्सान बनो। तुम्हारे विचार और चरित्र ठीक होना चाहिये तब तुम आगे जा सकते हो। इसलिये मैंने अपने आश्रम का नाम रूहानी आश्रम या राधास्वामी सत्संग नहीं रखा।

गुरु की प्रीत हिये में धार, मिलेगा सच्चा गुरु ज्ञान।

किस गुरु की प्रीति हिये में धारती है ? क्या फकीरचन्द की प्रीत ? नहीं, तुम भूले हुये हो। गुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है। जो कुछ गुरु ने तुम्हें बताया है अगर उसे चौबीस घन्टे हृदय में रखोगे तब निर्वाण प्राप्त होगी। फकीरचन्द को याद करने से तुम्हें निर्वाण नहीं मिलेगा। जो आदमी किसी गुरु का ध्यान करते हुए मरेंगे उन्हें मुक्ति नहीं मिल सकती अच्छी योनी मिलेगी। यह ठीक है। जैसी आशा वैसी बासा।

तीरथ में है पत्थर पानी, व्रत में कठिन कलेश।
बाद विवाद से मन हो चंचल, तब गुरु उपदेश॥
करे जो गुरु का संगत प्रानी, वह फिर पड़े न मन को खान
गुरु विष्णु गुरु शिव की मूरत, गुरु को ब्रह्मा जान।
गुरु ब्रह्म गुरु परब्रह्म है, अपनी बुद्धि पिछान॥

लो गुरु को फकीरचन्द समझेगा वह कैसे तरेगा ? हां ! फकरी-

चन्द की बात को सुनो, समझो तब गुरु के रूप को जानोगे। इस वास्ते सबसे पहले बाहर का गुरु है शर्त यह कि अगर कोई गुरु हो तो। मगर हमने तो अपने मन्दिर बनाने के लिये गुरुआई की है, किसी ने डेरा बनाने के लिए गुरुआई की है और किसी ने State या पंथ चलाने के लिए गुरुआई की। यह गुरुआई कहां रही।

गुरु की शक्ति सब का सार है, और सब भरम अज्ञान ॥

गुरु की भक्ति क्या है ? गुरु की बात को सुनकर, समझकर और उस पर अमल करना गुरु की भक्ति है।

दर्शन करे वचनपुनि सुने, सुन सुन कर नित मन में गुने।
गुन गुन काढ़ले तिस सारा, काढ़ सार तिस करे अहारा ॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग गत गम सब गई गँवाई।

जब निर्वाण मिलेगा तो गुरु के ज्ञान से मिलेगा।

भटक भटक कर भटका जग में, भटका बारम्बार।
जाके मन में अदक समाना, जाय न भव के पार ॥
तू सोच समझ चित धार, बात यह साँचो मन से मान।

यह दातादयाल कह रहे हैं कि मैंने बहुत भटका खाया है, बहुत घूमा हूँ। मैं जो कुछ कहता हूँ वह गुरु की भक्ति है। गुरु की भक्ति क्या है ? जो तुम इस समय कर रहे हो, यह गुरु भक्ति है। मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। अगर सच्ची लगे तो अमल करो झूठी लगे तो छोड़ दो। झगड़ा समाप्त होगया।

राधास्वामी सतगुरु पूरे, धरा सन्त अवतार।
सुरत शब्द मत योग बनाया, सार सार का सार ॥
बिन गुरु मानत बात नहीं पाते, सब सन्तन ने किया बखान ॥

अब प्रश्न यह है कि क्या सुरत शब्द के बिना आदमी की मोक्ष नहीं होती ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करना चाहता हूं ? शायद होती होगी। मगर मैं क्यों कहता हूँ कि नहीं होती। क्योंकि मानव का मन जो अपना आप है जब तक यह शरीर, मन

मन के विचार और प्रकाश अर्थात आत्मा को नहीं भूलेगा, छोड़े इससे ऊपर नहीं जायेगा नहीं निर्वाण को प्राप्त नहीं हो सकता। अगर मरते समय उसके सामनें कोई सरगुन या निर्गुण रूप या कोई और रूप आयेगा, उसे नीचे आना पड़ेगा। शब्द के सुनने से क्या होता है? आदमी मन, शरीर, विचार और प्रकाश को भूल जाता है तब उसका बेड़ा पार होता है मैं नहीं कहता, शायद कोई किसी और ढंग से मन को भूल सकता हो। मैंने जो समझा है वह कहता हूँ।

अगर मानव भगवान या गुरु से निष्काम प्रेम करे तो उसके सब काम होने चाहिये। एक शक्ति है. उसें जिस रूप में भी चाहो मानकर पूर्ण समझ कर उसका ध्यान किया करो शरणागत हुआ करो रक्षा होती रहेगी।

राधास्वामी

सच्चा यज्ञ

साखी

१—दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान।
कबीर दया न छोड़िये, जब लग घट में प्रान॥
२—जहाँ दया तहाँ आप है, जहां क्रोध तहाँ साप।
दया बसे जाके हिये, तहाँ विराजै पाप॥
३—दया छिमा और दीनता, भक्ति प्रेम का चिन्ह।
कहैं कबीर छिमा बिन, सकल होत हैं खिन्न॥

दया करना सच्चा यज्ञ है। इसके अभ्यास से अहंकार की जड़ आप ही आप कट जाती है और मन में शुभ भावना उत्पन्न होती है जिसका फल बहुत से बहुत और अधिक से अधिक है। दयावान में अभिमान नहीं होता और यह परमार्थ का सच्चा पात्र बन जाता है।

दृष्टान्त (१) युधिष्ठिर ने बहुत बड़ा यज्ञ किया। ऋषि मुनि विप्र ब्राह्मण सब उसमें सम्मिलित थे। जिसने जो माँगा वही उसको दान दिया गया। सब लोग यही कहते थे कि आज तक ऐसा यज्ञ किसी ने भी नहीं किया था। अभी यज्ञ समाप्त हो हुआ था और उसकी बढ़ाई कर रहे थे कि एक नेवला आया जिसका आधा धड़ सोने का हो गया था उसने यज्ञशाला की राख में लोट पोट लगाई और फिर कहने लगा कि कौन कहता है कि यह बड़ा यज्ञ है! तुम इसको यज्ञ कहो परन्तु मैं नहीं कहता।' सब लोग आश्चर्य के साथ एक दूसरे का मुँह देखने लगे। किसी ने पूछा, 'सच्चा यज्ञ कैसा होता है?' नेवला बोला, 'सुनो! एक ब्राह्मण के घर में चार प्राणी रहते थे— ब्राह्मण, उसकी स्त्री, उसका बेटा और उसकी बहू। चारों ही धर्मात्मा और दयावान थे। देश में सूखा पड़ी। पूरे एक महीने तक उन्हें अन्न नहीं मिला। सबने मिलकर खेत से आध सेर जौ बीने और उसके सत्तू बनाये। चारों प्राणी अपना अपना भाग लेकर खाने को बैठे। उसी समय उनके यहाँ एक भूखा अतिथि आ गया। उसने धीमे स्वर में कहा "आज तीस दिन से अन्न नहीं मिला। जो कोई मेरी प्राण रक्षा करेगा उसको बड़ा फल मिलेगा।' ब्राह्मण ने गृहस्थी हूं। यदि अतिथि यों ही चला जायेगा तो मैं पतित हो जाऊँगा। इसलिये तुम लोग अपना अपना भाग खाओ। मैं अपना भाग इसको दे दूँगा।' इसने ऐसा ही किया परन्तु अतिथि की तृप्ति नहीं हुई। तब ब्राह्मणी ने भी अपना भाग उसको दे दिया।' इससे भी उसका पेट नहीं भरा। तब बेटे ने भी अपना भाग उसे खिलाया उसे फिर भी अतृप्त देखकर बहू ने अपना सत्तू श्रद्धा और भक्ति के

स थ उसकी थाली में डाल दिया। वह खाकर आशीर्वाद देकर चल गया। यह चारों महीने भर से भूखे थे। सबके सब मर गये। कुछ सत्तू पृथ्वी पर गिरा था। मैंने उसके ब्राह्मण भोजन को सच्चा यज्ञ समझकर लोट पोट लगाई। मेरा आधा धड़ सोने का होगया क्योंकि सत्त बहुत ही कम रहा था। उस समय से मैं इस ताक में रहता हूं कि यदि कहीं और भी सच्चा यज्ञ हो तो वहाँ लोट पोट करने से शेष आधा धड़ भी सोने का हो जावे। मैंने सुना कि महाराज युधिष्ठिर ने महायज्ञ रचा है। यहाँ आकर देखता हूँ तो यज्ञ झूठा और दिखावे का निकला जिससे केवल यज्ञ करने वाले को साधारण मनुष्यों की दृष्टि में मान बड़ाई का फल तो मिल गया परन्तु यह सच्चा यज्ञ नहीं है।'

सारे ऋषि मुनि इसकी बात सुनकर दंग रह गये।

दृष्टान्त (२) - एक बनिये ने कई यज्ञ किये थे। सब के दिन एक तरह के नहीं रहते। काल भगवान का चक्र बराबर चलता रहता है। यह बेचारा भी निर्धन होगया था। स्त्री ने कहा, 'किसी राजा के पास जाकर अपने एक यज्ञ का फल बेच दो। रुपया पैसा हाथ आजाये जिससे दुख दूर हो।" बनिया सोच विचार में पड़ गया परन्तु स्त्री के आग्रह करने पर चल खड़ा हुआ चलते समय उसकी घर वाली ने ग्यारह रोटियाँ बनाकर राह में खाने के लिये दीं। वह उन्हें लेकर राजा के पास चल निकला। राजधानी दूर थी। राह में उसने एक कुतिया को देखा जिसने बहुत बच्चे दिये थे बरसात के दिन थे। कई दिन से उसे खाना नहीं मिला था। बनिये को याद आई। एक एक करके ग्यारह रोटियाँ कुतिया को खिला दीं और आप भूखा राजा के दरबार की ओर चला गया। राजा के जासूस ने राजा से यह घटना पहिले ही सुना रक्खी थी। इसके दरबार में पहुंचते ही राजा ने कहा, "मैं सुन चुका हूँ। तू ने राह में बहुत बड़ा

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

यज्ञ किया है। मेरे पास इतना रुपया नहीं है। जो उसके फल को मोल ले सकूँ। हाँ यदि कोई छोटा मोटा यज्ञ होता तो मैं साहस करता।" अन्त में राजा ने उसे कुछ दे दिला कर बिदा कर दिया और उसके यज्ञ के फल को मोल लेने का साहस नहीं किया।

———

दृष्टान्त (३) कोई मुसलमान फकीर जगल में से होकर कहीं जा रहा था। जंगल में कोसों कोई झील, तालाब, बावड़ी या नदी नहीं थी। उसने देखा कि कुयें के पास बहुत देर से एक प्यासा कुत्ता पड़ा हुआ हिचकियाँ ले रहा है। और उसके मरने में कोई कसर नहीं है। फकीर के पास डोल रस्सी नहीं थी। उसके हृदय में दया जो आई उसने अपनी पगड़ी फाड़ कर रस्सी बनाई और टोपी का डोल बनाकर कुयें से बड़ी कठिनाई के साथ पानी निकाला और कुत को पिलाया उसकी जान बच गई। वह कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपनी पूँछ हिलाने लगा।

यह सच्चा यज्ञ था।

दृष्टान्त (४)—किसी ब्राह्मण को ज्ञान की समझ नहीं आती थी पढ़ना लिखना, प्रमाण, युक्ति और शास्त्रार्थ सब कुछ सीखा परन्तु बोध नहीं होता था। इसे पंडित बनने की लालसा नहीं थी किन्तु वह साक्षात्कार करना चाहता था। एक दिन वह विचरता आरहा था कि किस तरह कोई अपने में सबको और सब में अपने को देखे! यह तो समझ नहीं आती। राह में एक कुयें के पास पहुंचा। कोई मैला कुचेला चिथड़ा लपेटे हुये चमार सूर्य की प्रचण्ड गर्मी में चलने से मूर्छित होकर पड़ा था। इसे दया आई। चमार को अपनी पीठ पर लाद कर वृक्ष की छाया में उठा लाया और थोड़ा सा ठण्डा पानी पिलाया। जब उसे सुध हुई, उसने आँखें खोलीं और प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। उसी समय इसका हृदय खिल उठा और वह आत्मदर्शी बन गया।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७५

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 96
श्री Pallya Gunde Rao
V. Jamgi (K)
P.O. Tadkal via- Pitlam
Dist. MEDAK, A.P.

सम्पादक— श्रीमती म[illegible]
व्यवस्थापक व प्रकाशक
श्रीमती सुधा
शिव भवन, लेख
अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh